**EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045**
**Volume 11, Issue 2, July-December, 2022, Available online at: www.eduzonejournal.com**

# Analytical Study of Contemporary Technique of Teaching

## प्रभावी शिक्षण की आधुनिक तकनीक का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**Dr. Aslam Sayeed**

Prof & Head Commerce AKS University, Satna MP

**सारांश :**

छात्रों के संदर्भ में गागर में सागर भरने की जो युक्ति है वह शिक्षण की तकनीक है एक सफल शिक्षक अपने शिक्षण तकनीक का उपयोग करके कठिन से कठिन विषयो को भी सारगर्भित बना देता है शिक्षण की समकालीन तकनीक छात्रों को बहुत अच्छी तरह से शिक्षित करती है और उन्हें किसी विषय को स्पष्ट रूप से समझाने में सहायता पहुँचाती है। वर्तमान युग में शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ती के लिए दिनोदिन इंटरनेट और गूगल का उपयोग बढ़ता ही जा रहा है इसका आशय यह है कि बदलते हुए परिवेश में और बदलते हुए समय के अनुसार शिक्षकों के साथ साथ छात्रों को भी शिक्षा प्रणाली की आधुनिक तकनीक का उपयोग करना प्रारम्भ कर देना चाहिए। आधुनिक शिक्षण तकनीक शिक्षण प्रणाली के विकास में एवं सीखने के क्षेत्र में अहम् भूमिका निभाती है। विभिन्न आधुनिक शिक्षण तकनीकों के उपयोग करने के लिए शिक्षकों के साथ साथ छात्रों में भी कुछ विशिष्ट कौशल एवं क्षमताओ का होना भी आवश्यक होता है अतः हमे शिक्षकों को और छात्रों को दोनों को ही इस आधुनिक शिक्षण तकनीक के युग में रह कर विकास करने के लिए सजग रहना आवश्यक होगा

**प्रस्तावना :**

शिक्षा वास्तव में एक प्रकाश बिंदु शिक्षा हमारे जीवन का एक ऐसा हिस्सा है जिसकी मदद से और जिसके माध्यम से मनुष्य ज्ञान के प्रकाश को अज्ञानता के अंधकार से मुक्त करता है आज के आधुनिक युग में शिक्षा की विभिन्न आधुनिक प्रणालियों का उपयोग किया जा रहा है जिसके द्वारा छात्रों में सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है और किसी विषयवस्तु को छात्र अधिक आसानी से सीखते है यह प्रणाली शिक्षण में भी उपयोगी है।

यदि एक शिक्षक के दृष्टिकोण से देखा जाए तो उसके पास कुछ प्रभावी शिक्षण विधिया होनी चाहिए जिनका उपयोग विषम परिस्थिति में किसी समय विशेष पर किया जा सकता होशिक्षण वास्तव में एक तकनीक है अक्सर यह देखा गया है की किसी विद्यालय या महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में यूँ तो बहुत से शिक्षक होते है किन्तु इन शिक्षको में से कुछ शिक्षक बहुत ही लोकप्रिय होते है जिनके पास छात्र– छात्राओं का जमघट या जमावड़ा अपने विषय से संबंधित कठिनाइयों को दूर करने के लिए लगा रहता है और उन्ही में से कुछ शिक्षक ऐसे भी होते है जो कोई खास प्रभावी नहीं होते।

अगर इस कारण की विवेचना की जाये कि कोई शिक्षक अत्यंत प्रभावी है तो कोई खास प्रभावी नहीं है तो हम ये पाते है की यह सब शिक्षक द्वारा अपनायी जाने वाली शिक्षण तकनीक के प्रभाव का परिणाम हैकभी कभी ऐसा भी होता है की एक विषय को पढ़ाने वाले दो शिक्षक है तो विद्यार्थी के द्वारा किसी एक शिक्षक को अधिक पसंद किया जाता है तथा दूसरे को पहले की अपेक्षाकृत कम पसंद किया जाता है जिसकी मुख्य वजह शिक्षक का शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कक्षा में विद्यार्थियों पर छोड़ा गया प्रभाव है। प्रभावी शिक्षण से ही कोई

कोई शिक्षक छात्रों के मध्य लोकप्रिय बन पाता है और यही वह कारण है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का आधार बनता है

**क्लार्क के अनुसार** " शिक्षण वह प्रक्रिया है जो शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए नियोजित एवं संचालित की जाती है शिक्षक यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है कि सभी विद्यार्थियों को सीखने में पूरी तरह से भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सके और इसके लिए जो सहायता उसे चाहिए वो मिल सके और ऐसा तभी संभव होगा जब संसाधनों का प्रबंधन प्रभावी ढंग से तथा सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के स्पष्ट प्रयोजन के साथ किया जाता है।वास्तव में विषय को बोधगम्य बना कर प्रस्तुत करना ही शिक्षक की महत्वपूर्ण विशेषता है।
शिक्षण और अध्ययन की क्रिया में बहुत से कारक समाहित होते है विद्यार्थी जिस तरीके से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए नया ज्ञान आचार और कौशल को शामिल करता है जिससे उसके सीखने की शक्ति में वृद्धि हो सके ये सभी करक आपस में अंतर्संबन्धी होते है।

शिक्षण पर विभिन्न किस्म के दृष्टिकोण सामने आये है जिसमे से एक ज्ञानात्मक शिक्षण है जो शिक्षण को मस्तिष्क की एक क्रिया के रूप में देखता है तो दूसरी ओर रचनात्मक शिक्षण हैजो ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया में की गयी रचना के रूप में देखता हैज्ञानात्मक शैली हमारी तीक्ष्ण बुद्धि का एकाधिक स्वरुप है तथा एक ऐसा शिक्षण है जो ऐसे विद्यार्थीयो के काम आ सकता है जिन्हे इसकी विशेष जरूरत हो और जो अलग अलग प्रकार के पारिवारिक सांस्कृतिक पृष्टभूमि से आते है जबकि रचनात्मकता शिक्षण की ऐसी रणनीति है जिसमे विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान आस्थाओ और कौशल का प्रयोग किया जाता है। रचनात्मक रणनीति के माध्यम से विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान और सूचना के आधार पर नई किस्म की समझ को विकसित करता है इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों को स्वयं जवाब खोजने के अधिक अवसर प्राप्त होते है। शिक्षक विद्यार्थियों के जवाब तलाशने की प्रक्रिया का निरिक्षण करता है उन्हें निर्देशित करता है तथा सोचने समझने के नये – नये तरीको का सूत्रपात करता है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सहज सरल तथा सक्षम बनाने के लिए नवीन पद्धतियों को अपनाना होगा

**प्रभावी शिक्षण हेतु ध्यान देने योग्य बातें –**

**(1)स्थानीय परिवेश के अनुसार स्वयं को ढालना** – यदि शिक्षक यह चाहता है कि वह अपने शिक्षण को प्रभावी बना सके तो इसके लिए पहले उसे खुद को स्थानीय परिवेश में शामिल करना होगा जिससे वह वहाँ की भाषा बोली और व्यवहार के तौर तरीको को समझ सके क्योकि यदि शिक्षक द्वारा प्रारम्भ में ही मानक भाषा का उपयोग किया जायेगा तो वह उतनी सार्थक और प्रभावी नहीं होगी जितनी प्रभावी स्थानीय बोली होती है और इस प्रयोग से विद्यार्थियों की समझ का विकास भी अधिक होता है इसके साथ साथ ही यदि शिक्षक विषय को सारगर्भित करने के उद्देश्य से कोई कहानी या चुटकुला इत्यादि सुनाता है तो इससे बात बच्चो के समझ में आ जाती है और छात्र एवं शिक्षक के बीच एक बॉन्डिंग बन जाती है।

**(2) विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पारिवारिक परिस्थितियों का ज्ञान-**अच्छे शिक्षण के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक विद्यार्थियों के पारिवारिक और सांस्कृतिक माहौल की पूरी जानकारी रखे क्योकि हो सकता है छात्र किसी पारिवारिक समस्या के रहते अपना अध्ययन सही तरह से न कर पा रहा हो और यदि शिक्षक को इस बात की जानकारी नहीं है तो वह विद्यार्थी को इस हेतु डॉट फटकार कर सकता जिसका परिणाम यह होगा कि डॉट सुनने के डर से छात्र कक्षा में उपस्थित होना ही बंद कर देगा

**(3) स्थानीय सामग्री से ही सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण-**शिक्षकों को यह प्रयास करना चाहिए कि यदि वे स्थानीय सामग्री और उदाहरण से ही सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण करे तो यह उदाहरण छात्र को ज्यादा प्रभावित करेंगे जो शिक्षण को प्रभावी बनाने में सहायक होंगी

**(4) भिन्न भिन्न स्तर पर समूह बनाना-**प्रभावी शिक्षण के लिए यह जरूरी है कि शिक्षक के द्वारा कक्षा में भिन्न भिन्न स्तर पर ऐसे समूह बनाये जाए जिसमे सभी स्तर के छात्रों को सम्मिलित किया जाए और उन सभी को उचित अवसर भी प्राप्त हो यह भी सुनिश्चित किया जाये

**शिक्षण की विधियाँ (पढ़ाने के तरीके)**– एक शिक्षक के द्वारा परिस्थितियों के अनुसार शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाता शिक्षण की विधियों को मुख्य रूप से दो भागो में विभक्त किया गया है
(1) पहला – समूह शिक्षण विधि (2)दूसरा- व्यक्तिगत शिक्षण विधि

**(1 ) समूह शिक्षण विधि–**समूह शिक्षण पद्धति के अंतर्गत एक शिक्षक के द्वारा तीन अलग अलग कौशल और विधियों का उपयोग किया जाता है जिनको निम्नानुसार समझा जा सकता है

**(a) सैद्धांतिक ज्ञान और औपचारिक व्याख्यान** :औपचारिक व्याख्यान के माध्यम से सैद्धांतिक ज्ञान के निर्माण में मदद होती हैवास्तव में सैद्धांतिक ज्ञान इस बात का ज्ञान है कि कुछ बाते कुछ सिद्धांत सत्य क्यों है कुछ समझाने के लिए यह बताना आवश्यक होता है कि ये सत्य क्यों है इस सत्य को सिद्ध करने के लिए एक स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है और यही स्पष्टीकरण सैद्धांतिक ज्ञान है

**(b) टीम शिक्षण एवं समूह अध्ययन** : एक बड़े समूह को पढ़ाने के लिए जो नया दृष्टिकोण है वह टीम शिक्षण है। प्रशिक्षकों का एक समूह जो किसी भी आयु के छात्रों के समूह को कुछ सिखाने के लिए या उनकी सीखने में मदद करने के लिए नियमित रूप से उद्देश्य पूर्ण कार्य करते है टीम शिक्षण कहलाता है। टीम शिक्षण के अंतर्गत शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम का लक्ष्य निर्धारित करके एक पाठयक्रम तैयार किया जाता है साथ ही वे व्यक्तिगत पाठयोजना तैयार करके छात्रों को पढ़ाते भी है और उनके परिणामो का मूल्यांकन भी करते है

(ब)मीडिया प्रस्तुति : जब शिक्षक के द्वारा टेलीविजन ऑडियो एवं वीडियो की सहायता से कोई बात बताई या समझाई जाती है तो इसे मीडिया प्रस्तुति कहते है वस्तुतः मीडिया प्रस्तुति एक ऐसी बेहतर विधि है जिसकी सहायता से छात्र को कक्षा के अंदर बड़ी आसानी से लाया जा सकता है वास्तव में यह आभासी छवियों के द्वारा बहुत कुछ सीखने का एक सरल तरीका है।

**(2) व्यक्तिगत शिक्षण पद्धति** : व्यक्तिगत शिक्षण पद्धति के दो रूप होते है (1) अपरिष्कृत (2)परिष्कृत (विभेदित )

**(1) अपरिष्कृत** : यह कार्य पद्धति ऐसी पद्धति है जो नयी अवधारणाओं के परिचय की और नए प्राप्त ज्ञान के मूल्याङ्कन की अनुमति देती है इसके अंतर्गत छात्रों द्वारा किये जाने वाले व्यक्तिगत कार्य एक सामान होते है अर्थात सभी छात्रों को एक सामान कार्य आवंटित किया जाता है और सभी छात्र सामान नियमो के अनुसार इस कार्य को सम्पादित करते इस प्रकार के शिक्षण से छात्रों द्वारा पूरे किये गए असाइनमेंट की तुलना करना संभव होता जो कि एक शिक्षक द्वारा किया जाता है लेकिन इस कार्य में कुछ चुनौतियां भी आती है कि हम ये कैसे सुनिश्चित की सभी छात्रों को नई सामग्री में महारत प्राप्त है।

निष्कर्षत : यह विधि नियंत्रण की एक कठिन और प्रभावी प्रणाली की मांग करती है

**(2) परिष्कृत** : यह एक ऐसा तरीका है जो प्रत्येक छात्र के लिए एक अलग दृष्टिकोण और स्वायत्त कार्य सुनिश्चित करता है इसमें प्रत्येक छात्र को दिए जाने वाला असाइनमेंट (कार्य) पृथक पृथक होता है जो प्रत्येक छात्र के व्यक्तिगत गुणों के आधार के साथ तैयार किये जाते है ये असाइनमेंट छात्रों के व्यक्तिगत कार्य निर्धारित करते है और भिन्न भिन्न होते है

**प्रभावी शिक्षण की युक्तियाँ** : प्रभावी शिक्षण वह है छात्रों का ध्यान इतना मजबूती से रखे कि छात्र आपकी ओर आकर्षित हो और आपसे यह आशा करे कि आप ज्यादा देर तक कक्षा में रह कर शिक्षण कार्य करे। वास्तव में प्रभावी शिक्षण का उदहारण तो ये है कि शिक्षक के कक्षा में जाते ही आपके द्वारा बोले गए या किये गए कार्य तुरंत उन छात्रों का ध्यान खींच कर आपके तरफ कर दे छात्र पूरी तरह से चुपचाप बैठकर उत्सुकता से आपके अगले शब्दों का इंतजार कर रहे वे छात्र आपकी प्रस्तुति से इतने रोमांचित हो जाये की पूरी कक्षा में चहुंओर शांति छा जाये और आप एक पिनड्रॉप साइलेंस को महसूस करे। उपरोक्त स्थिति को प्राप्त करने के लिए शिक्षक द्वारा कुछ पद्धतियों या युक्तियों का प्रयोग करना होगा जो निम्न प्रकार की हो सकती है

**(1) इच्छा विधि (The Desire Method)** : जब शिक्षक द्वारा किसी विषय की सामग्री को अबाउट ए टॉपिक (about a topic ) पढ़ाने का प्रयास किया जाता है तो फिर अबाउट ए टॉपिक about a topic(किसी विषय के परितः )के बारे में पढ़ाने की गलती यह है कि जब शिक्षक इतिहास वाणिज्य या रसायन विज्ञानया अन्य कोई विषय पढ़ाते समय अबाउट द टॉपिक के अंतर्गत अबाउट (इसके बारे में ) की बात करते है तो उस समय छात्रों पर से नियंत्रण खो जाता है क्योकि तब लोग आप की बातो पर ध्यान नहीं देते इसका समाधान ये है की शिक्षक को अबाउट द टॉपिकabout a topic पढ़ाने के बजाय फॉर द स्टूडेंटfor the student (अर्थात छात्रों के लिए ) पढ़ाना चाहिए अर्थात आप जो बात समझाना या बताना चाह रहे है वह बात अथवा आपके द्वारा सिखाई गयी सामग्री का लाभ छात्र को तुरंत महसूस होना चाहिए क्योकि जब छात्र लाभ महसूस करेगा तो उसके अंदर आगे और पढ़ने या समझने या ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा पैदा होगी जब उसके अंदर इच्छा जागृत होगी तो वह और अधिक ध्यान देगा।

इच्छा पद्धति से आशय यही है कि छात्र में एक इच्छा जागृत करानी होगी प्रभावी शिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह है की किस प्रकार से पढाना प्रारम्भ किया जाए जिस से की छात्र का ध्यान खीचा जा सके यदि यह शरुआत गलत तरीके से होती है तो फिर छात्र का ध्यान वापस लाना असंभव होता है।

कभी भी शिक्षण कार्य का प्रारम्भ अबाउट ए टॉपिक की गलती से न किया जाना चाहिए इसके स्थान पर अपना शिक्षण कार्य विशिष्ट हेडलाइन और शिक्षण हुक के साथ प्रारम्भ करना चाहिए अर्थात शिक्षक जो सामग्री छात्रों को देना चाहते वो विषय के परितः होने के बजाय हेड लाइनheadline और शिक्षण हुक के माध्यम से पहुचायी जानी चाहिए`.

हेड लाइन headline या शीर्षक एक छोटा सा वाक्य है लेकिन यह शीर्षक छात्र का ध्यान आकर्षित करता है जो वाक्य शीर्षक के साथ प्रारम्भ होते उनमे ध्यान आकर्षित करने की क्षमता उन वाक्यों से अधिक होती है जो बिना शीर्षक के प्रारम्भ होते है।

किसी भी विषय को सिखाते समय एक शिक्षक जो शीर्षक देता है वह छात्रों के साथ एक वादा होता है कि जब तक शिक्षक के द्वारा दी जाने वाली सामग्री छात्रों के दिमाग में आ नहीं जाती वह समझने का प्रयास करता रहेगा अगर ये सामग्री छात्रों के दिमाग में नहीं आती तो फिर ये पता कर पाना कठिन हो जाता है कि वे क्या सीखना चाहते है छात्र ज्ञान का भूखा होता है वह शिक्षक पर भरोसा करता है इसके लिए यह देखना होगा कि शिक्षक की सामग्री छात्रों के लिए किस प्रकार से उपयोगी एवं लाभ कारी है।

**(2)दर्द के एहसास की विधि (feel the pain method)**प्रभावी शिक्षण की दूसरी विधि यह है कि छात्र अपने को प्राप्त होने वाले लाभ को ना प्राप्त कर सकने के दर्द को महसूस करें ध्यान रहे कि जब कोई शिक्षक अपनी कक्षा के छात्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अथक प्रयास करते हैं तो वे दर्द का एहसास करते हैं और दर्द हमेशा किसी चीज की कमी पर जोर देता है इसलिए यदि ध्यान देने से लाभ प्राप्त होता है तो ध्यान ना देने के कारण दर्द प्राप्त होता है तात्पर्य यह है कि यदि लाभ ध्यान है तो ध्यान की कमी दर्द है यदि कोई छात्र सीखने के संबंध में शिक्षक की सामग्री को प्राप्त नहीं कर पा रहा अर्थात वह कुछ खो रहा है तो इसका प्रभाव धनात्मक नहीं बल्कि ऋणात्मक पड़ेगा और शिक्षक द्वारा दी गई सामग्री कोना जानने और ना समझने से छात्र के भविष्य की सफलता निश्चित रूप से प्रभावित होगी

**(3)पूर्वालोकन रणनीति (The preview strategy)-**पूर्वालोकन रणनीति एक शिक्षक के लिए अपने पाठ्यक्रम के लिए पूर्वानुमान बनाए जाने की एक बेहतरीन शिक्षण पद्धति हैं

**(4)दृश्य श्रव्य और गतिजजा विधि (Teach with Visual Audio and Kinasthetic)–** प्रभावी शिक्षण के लिए VAK अर्थात दृश्य श्रव्य और गतिजजा अत्यंत प्रभावी विधि है शिक्षार्थी के तीन मुख्य प्रकार होते हैं विजुअल अर्थात दृश्य ऑडियो अर्थात श्रव्य तथा काइनेस्थेटिक अर्थात गतिजजा। यदि कोई शिक्षक प्रभावी शिक्षण में महारत हासिल करना चाहता है तो उसे यह ध्यान देना होगा कि उसका छात्र किस प्रकार का है आज का छात्र दृश्य सामग्री को देख रहा है और ऑडियो से संबंधित सामग्री को सुन रहा है साथ ही वह गतिजजा सामग्री को महसूस करता है अर्थात अधिकतम सीखने का माहौल एक व्याख्यान के समाप्त होने की निष्क्रिय प्रतीक्षा करना नहीं बल्कि आदर्श सीखने का वातावरण उस समय होता है जब छात्र स्वयं सामग्री को देखता सुनता और महसूस करता है यही कारण है कि एनीमेटेड वीडियो और प्रस्तुतियां वर्तमान में प्रभावी शिक्षण का एक नया लोकप्रिय माध्यम बन गई है क्योंकि एनीमेटेड वीडियो ऑडियो और विजुअल को हिट करते हैं यही कारण है कि यह शिक्षण पद्धति को अधिक प्रभावी बना देती है

**प्रभावी शिक्षण के लाभ–** प्रभावी शिक्षण से जो लाभ निकलकर सामने आते हैं वह निम्न प्रकार से है

1. जब शिक्षक द्वारा प्रभावी शिक्षण दिया जा रहा हो जिसमें वह पढ़ाने वाले बिंदु का शीर्षक अर्थात हेडलाइन और शिक्षण हुक इत्यादि का प्रयोग कर रहा हो तो यह छात्रों के लिए इंटरेस्टेड बन जाता है अर्थात इसमें छात्रों को मजा आने लगता है और तब छात्र अपने कक्षा सत्र में भाग लेने के लिए अधिक प्रेरित होता है अर्थात व कक्षा में बैठकर अच्छा महसूस करता है और उसे कक्षा उबाऊ नहीं लगती है.

2 .प्रभावी शिक्षण के माध्यम से छात्र आसानी से और बहुत ही तेज गति से चुनौतीपूर्ण अवधारणाओं को समझने में समर्थ और सक्षम हो जाता है

3 .प्रभावी शिक्षण के माध्यम से किसी छात्र के पढ़ने व सीखने की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है जो कि उच्च अनुकूलन के योग्य है

4 .प्रभावी शिक्षण छात्र के अंदर सीखने की विधि को रचनात्मकता प्रदान करती है तथा उसकी जिज्ञासा कारक शक्तियों को भी बढ़ावा देती है जिससे वे ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में अधिक से अधिक सक्रिय हो जाते हैं

5..प्रभावी शिक्षण के अंतर्गत एक एक्टिव क्लास संवर्धित वास्तविकता और आभासी वास्तविकता का अनुप्रयोगों और उपकरणों की मदद से सीखने की प्रक्रिया के दौरान व्यस्त रूपों की पेशकश कर सकते हैं

**प्रभावी शिक्षण के सिद्धांत–**

किसी भी विषय को पढ़ाने से पहले विद्यार्थियों को सीखने के लिए मानसिक रूप से तैयार करना जरूरी है। प्रत्येक बच्चे की शैक्षिक पारिवारिक मानसिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए उन्हें सीखने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए इसके लिए शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के गेम और एक्टिविटी के माध्यम से विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए साथ ही विद्यार्थियों के गैर विषय से संबंधित क्षेत्रों जीवन कौशल व्यवहार

आदि पर भी ध्यान देना चाहिए. विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविक चुनौतियों के लिए तैयार करना शिक्षकों का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए

शिक्षण के सिद्धांत जिनका पालन करके शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है वह निम्न प्रकार हैं

**(1) क्रियाशीलता का सिद्धांत या करके सीखने का सिद्धांत –**
जब शिक्षक के द्वारा प्रत्येक प्रकार के पाठ में या विषय में शारीरिक या मानसिक क्रियाशीलता उत्पन्न की जाती है तो उसे क्रियाशीलता का सिद्धांत कहते है। यहां शारीरिक क्रियाशीलता से आशय विद्यार्थियों की कमेंइंद्रियों को क्रियाशीलता प्रदान करना तथा मानसिक क्रियाशीलता का अर्थ विद्यार्थियों के ज्ञान इंद्रियों को क्रियाशील रखना होता है प्रभावी शिक्षण के लिए एक शिक्षक को विद्यार्थियों की रचनात्मक तथा अन्य मूल प्रवृत्तियां का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए

**(2) अभिप्रेरणा का सिद्धांत –**
इस सिद्धांत का आशय यह है कि ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्य के लिए विद्यार्थियों में रुचि उत्पन्न करना आवश्यक है इसके लिए शिक्षक को लगातार छात्र को अभीप्रेरित करना होगा क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जब शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर देता है तो सीखने और सिखाने की क्रिया सुचारू रूप से क्रियाशील हो जाती है

**(3)रुचि का सिद्धांत –**प्रभावी शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी की जिज्ञासा को जागृत किया जाए जब विद्यार्थी की जिज्ञासा जागृत होगी तो विषय या पाठ के उद्देश्य को समझ पाएगा और यहीं से उसकी विषय के प्रति रुचि जागृत हो जाएगी

**(4 )जीवन से संबंध स्थापित करने क सिद्धांत –**मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियों की अपनी अपनी दुनिया अलग–अलग होती है प्रत्येक विद्यार्थी केवल उन क्रियाओं अथवा विषयों में ही अधिक रुचि लेता है जिनका इसकी अपनी निजी दुनिया से संबंध होता है इसी बात को ध्यान में रखते हुए आधुनिक युग में प्रभावी शिक्षण के उद्देश्य से शिक्षण कार्य करते समय छात्र की उस रूचि का ध्यान रखना चाहिए जो रुचि उसके जीवन से संबंधित हो

**(5)निश्चित उद्देश्यों का सिद्धांत–** जो विषय या पाठ जिसको शिक्षक पढ़ाने जा रहा है उसके उद्देश्यों को पाठ पढ़ाने से पहले ही विद्यार्थियों को बता दिया जाना चाहिए ताकि विषय के उद्देश्य निश्चित हो जाएं

## **आधुनिक शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी की भूमिका** (Role of Educational Technology in Modern Education)

आधुनिक शिक्षण प्रक्रिया में शैक्षिक तकनीकी की भूमिका और योगदान को निम्नानुसार स्पष्ट किया जा सकता है–
(1) शिक्षा के लक्ष्यों और उद्देश्यों के निर्धारण में वर्तमान समय में शैक्षिक तकनीकी का महत्त्वपूर्ण योगदान है।
(2) इन लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शिक्षा के समस्त स्तरों पर उचित पाठ्यक्रमों का निर्धारण और उनकी रचना में भी शैक्षिक तकनीकी का योगदान है।
(3) शैक्षिक तकनीकी स्कूलों / कॉलेजों में उपलब्ध संसाधनों के उचित प्रबन्धन और उनके उपयोग में पर्याप्त सहायता प्रदान करती है।
(4) शैक्षिक तकनीकी छात्रों / शिक्षार्थियों को अधिगम सम्बन्धी अनुभवों को उचित रूप में अर्जित करने में सहायता देती है।

(5) शैक्षिक तकनीकी शैक्षिक प्रबन्धन और प्रशासन से सम्बन्धित समस्याओं को हल करने में भी सहायता देती है।

**निष्कर्ष –**

वर्तमान समय में इन्सेट–Aतथा इन्सेट–B के प्रक्षेपण से दूरदर्शन केन्द्रों पर शैक्षिक तकनीकी केन्द्रों द्वारा कई प्रकार की प्रवृत्तियाँ चलने लगी हैं। शैक्षिक चलचित्रों का निर्माण बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। सूक्ष्म अध्ययन की लोकप्रियता के सन्दर्भ में टी. वी., कम्प्यूटर, वीडियो रिकार्डिंग आदि का प्रयोग बढ़ा है। निकट भविष्य में भारत शैक्षिक तकनीकी की दिशा में कई नवाचार के प्रयोग करेगा। कई नवाचारोंय जैसे क्लास आदि का प्रयोग हो रहा है और भविष्य में इसके और विकसित होने की सम्भावनाहै।

समकालीनऔर प्रभावी शिक्षण वर्तमान युग में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है रचनात्मकता कक्षा में प्रभाव उत्पन्न करने के लिए आवश्यकता बन गई है और छात्रों को सिखाने के नए–नए तरीके का आविष्कार करती है तात्पर्य यह है कि रचनात्मकता सीखने के माहौल को सहज और प्रेरक बनाती है।

किसी चीज को सीखने के लिए मौजूदा समझ को बदलने की आवश्यकता होती है विशेषकर जब नई स्थितियों के लिए किसी की समझ को लागू करना पड़ता है।

सीखने की प्रक्रिया के दौरान शिक्षार्थियों की स्वयं की समझ, शिक्षार्थियों की समझ पर निर्माण, गलत धारणाओं को ठीक करने और सीखने वालों के साथ देखने और संलग्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है.
सबसे प्रभावी शिक्षण तब होता है जब शिक्षार्थी विभिन्न और विविध स्थितियों में जो कुछ सीखते हैं उसे परिवहन करते हैं अर्थात यह ज्ञान एक से दूसरे तक पहुंचाया जाता है

निष्कर्ष के तौर पर अंत में यही कहा जा सकता है की प्रभावी शिक्षण छात्रों के ज्ञानेंद्रियों और कर्मेंद्रियों को प्रशिक्षित करने का एक साधन है तथा प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पुनर्बलन का प्रयोग करना सिखाता है पुनर्बलन से आशय ऐसे उद्दीपनाओ का प्रयोग करना या उन्हें प्रस्तुत करना ताकि किसी अनुक्रिया के होने की संभावना बढ़ जाए जैसे किसी विद्यार्थी को उसके किए गए किसी बेहतरीन कार्य के बदले पुरस्कार दिया जाना।

अंत में यही कहा जा सकता है कि प्रभावी शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वह कुछ नया करने का प्रयास करें कुछ नया खोजने का भी प्रयास करें अर्थात शिक्षण कार्य रचनात्मक सृजनात्मक और सृजनात्मकता से परिपूर्ण हो ताकि कक्षा के अंदर की नीरसता समाप्त हो जाए हो जाए अर्थात शिक्षण प्रक्रिया नीरस न होकर मनोरंजनपूर्ण होनी चाहिए

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –**

1 . भटनागर सुरेश ''शिक्षा अनुसंधान ''विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
2. अग्रवाल डा संध्या ''शिक्षा मनोविज्ञान'' प्रकाशन मंदिर वाराणसी
3. आधुनिक शिक्षा की तकनीक टारगेट नोट्स डॉट काम
4. समाचार पत्र
5. विविध इंटरनेट साइट